कल्याण भारती

वनवासी सेवा,
संगठन और
संस्कृति संरक्षण
हेतु समर्पित

अक्षर-अक्षर दीप जले,
वन के पावन अंचल में।
अपना भारत प्रखर बनेगा,
विश्व धरा में, अम्बर में।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष - 28 अंक -3

जुलाई-सितम्बर 2017 (विक्रम संवत् 2074)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय 2
- वनवासी कल्याण आश्रम नगरीय... 3
- बंगाल-बिहार में बाढ़ से भीषण तबाही 4
- दक्षिण बंग इकाई का अनूठा प्रयास... 5
- कोलकाता-हावड़ा महानगर का 26 वां... 6
- हावड़ा महानगर के कार्यक्रम 7
- राष्ट्रीय एकात्मता का अनुष्ठान : रक्षाबंधन 8
- नाग्या क्रांतिकारी का जीवन चरित्र... 9
- वनवासी विकास समिति, भिलाई.... 9
- लेकटाऊन महिला समिति द्वारा राखी... 10
- कोलकाता महानगर महिला समिति ... 10
- काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा विष्णु... 11
- स्वतंत्रता दिवस पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता.... 11
- कोटिया भील.... 12
- शोक संवाद 13
- हमारी संस्कृति हमारा स्वास्थ्य 14
- अनुकरणीय 15
- बोधकथा... आओ और जाओ... 16
- कविता ... कदम मिलाकर चलना होगा... 16

संपादकीय.....

भारत माँ की संतानें हम, शीश झुकाना क्या जानें ?

आज पूरे देश में परिवर्तन का एक नया माहौल तेजी से फैलता जा रहा है। बीते सालों में हमने अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया है। विदेशों में भारत की अलग पहचान बनी है। देश की गरिमा और देश का स्वाभिमान विश्व स्तर पर स्थापित हुआ है। हमारी क्षमता का प्रदर्शन हुआ है। भारत की बात अब गंभीरता से सुनी जा रही है। भारत ने दुनिया में अपनी ऐसी छवि बनाई है जो शांतिप्रिय है, धैर्यवान है और पड़ोसी देशों के साथ बेहतर संबंधों का हिमायती है। माल एवं सेवाकर (जीएसटी) के रूप में अब तक का सबसे बड़ा सुधार लागू किया गया जिससे देश एक एकीकृत बाजार बन सका है। रीयल एस्टेट में धांधली रोकने को रेरा कानून लागू किया है। हाइवे के निर्माण में तीव्र गति आई है। बिजली की उपलब्धता बढ़ी है। रेल व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। शीर्ष शासन में चौतरफा कर्मठता आई है। इन कदमों के फलस्वरुप अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है। सभी उद्योगों, विशेषकर असंगठित क्षेत्र के छोटे उद्योगों को बिजली एवं सड़क उपलब्ध होने से उनकी हालत में सुधार हुआ है। पिछले तीन साल से विदेशी निवेश के मामले में सबसे बेहतर मुल्कों में भारत शीर्ष दस देशों में शामिल है।

तीन तलाक पर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला निश्चय ही स्वागत योग्य है। यह महज एक प्रथा के अंत की ओर संकेत नहीं करता बल्कि यह पितृसत्तामक मानसिकता पर भी कड़ी चोट है। आजादी के 70 सालों में यह पहला मौका होगा जब हमारे देश में विदेश और रक्षा मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर महिलाएं आसीन हैं। हर तरफ विकास की गाथा सुनाई पड़ रही है, देश डिजिटल हो रहा है। किन्तु इस बदलाव में अंतिम पायदान का वनवासी कहां है ? हम सब इस सवाल पर सोचने के लिए कभी फुर्सत नहीं निकाल पाते। नेल्सन मंडेला अक्सर कहा करते थे कि एक बड़े पहाड़ पर चढ़ने के बाद ही पता चलता है कि आगे ऐसे कई पहाड़ चढ़ने के लिए बाकी हैं। देश में एक तरफ राष्ट्रवादी विचारधारा लोकप्रिय हो रही है तो दूसरी तरफ देश के खिलाफ साजिश करने वाले तत्व भी सक्रिय हैं। यह समय बहुत ही कठिन चुनौती से भरा है। एक ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विकास के नए सोपान तय कर रहे हैं और हर घर रोशनी, हर घर खुशहाली लाने की साधना में रत हैं दूसरी ओर विनाश और अंधेरे के प्रतिनिधि हमारे सैनिकों पर आघात कर रहे हैं। सीमा पर हर समय तनाव का माहौल बना हुआ हैं।

हमारे प्रधानमंत्री का न्यू इंडिया का संकल्प और देश में परिवर्तन की बात के मायने बहुत गहरे हैं। जो होता है होने दो- यह पौरुषहीन कथन है। अब तो आवाज यही उठे कि बदला है, बदल रहा है, बदल सकता है। हमें ऐसे भारत का निर्माण करना है जो सुरक्षित हो, समृद्ध हो, शक्तिशाली हो, जहां सबको समान अवसर प्राप्त हो। सबको मिलकर एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जो आर्थिक नेतृत्व देने के साथ ही नैतिक आदर्श भी प्रस्तुत करें। देश के लिए ये दोनों मापदंड कभी अलग नहीं हो सकते। ये दोनों जुड़े हुए हैं। भारत की शक्ति संस्कृति और सभ्यता की शक्ति है, अहिंसा की शक्ति है, करुणा की शक्ति है, मनुष्यता की शक्ति है। किन्तु इस शक्ति का प्रयोग और उपयोग समूचे विश्व के हित साधन के लिए करना है। सतही महत्वाकांक्षाओं एवं स्पर्धाओं से ऊपर उठकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर कर्मरत रहना है तभी भव्य, दिव्य भारत का स्वप्न साकार होगा। *सबका साथ सबका विकास*-इस ध्येय वाक्य को व्यापक अर्थ में समझकर भारत को पुन: भौतिक, तकनीकी एवं आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में संतुलन एवं समन्वय स्थापित करना है। इति शुभम्

- स्नेहलता बैद

वनवासी कल्याण आश्रम का नगरीय कार्य

- कृपा प्रसाद सिंह, अ.भा. उपाध्यक्ष

(कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं का नैपुण्य वर्ग श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के प्रांगण में 2,3 सितम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ। नैपुण्य वर्ग के उद्घाटन सत्र में भारत के विभिन्न नगरों में संगठनात्मक कार्य व विभिन्न प्रयोगों के विषय पर आश्रम के उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह ने अपनी प्रस्तुति की जिसे कार्यकर्ताओं के लिये लेख रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। -संपादक)

नगरीय कार्य की शुरूआत 1981 में प्रथम संगठन मंत्री मा. रामभाउ गोडबोले के द्वारा फरवरी माह में दिल्ली में हुई। सितम्बर 1981 में कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री नारायण देव, श्री बलदेव मल्होत्रा, श्री विजय बहल, श्री थडानी जी आदि कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर मा. रामभाउ गोडबोले ने मंडली बनायी। श्रीनिवास गोयल, चमनलाल चोपड़ा, प्रभाकर बेगडे, सूर्यनारायण सक्सेना आदि कार्यकर्ता इसमें शामिल हुए। दिल्ली में अ.भा. सम्मेलन हेतु भूमिपूजन में त्रिपुरा की राजकुमारी, राज्यपाल धर्मवीर जी, आदिम जाति सेवा मंडल के श्री ज. ह. चिंचालकर ने भाग लिया। मा. रामभाउ गोडबोले का आग्रह रहता था कि नगर के कार्यकर्ताओं को वनवासी क्षेत्रों का प्रवास करना चाहिये। वनवासी ग्राम व वनवासी परिवार का दिग्दर्शन करना चाहिये। आगे चलकर यही प्रयास वनयात्रा के रूप में प्रचलित हुआ। 1990 के दशक में कोलकाता के कार्य में मा. श्याम जी गुप्त का प्रवेश क्षेत्रीय संगठन मंत्री के रूप में हुआ। उनका केन्द्र तो उस समय रॉची निर्धारित हुआ था परन्तु इसी कार्य के प्रयोजन से उनका कलकत्ता प्रवास अनवरत होता रहा। वनयात्रा की रचना संभवत: कोलकाता महानगर के कार्य का एक कार्यक्रम बना और इस वनयात्रा से कार्य को गति मिली। पं बंगाल, उड़ीसा व बिहार के प्रकल्पों को देखने व वनवासी जीवन का अध्ययन करने का एक प्रभावी कार्यक्रम 'वनयात्रा' बन गया। शनै: शनै: यह कार्यक्रम रांची, बोकारो, धनबाद, राउरकेला, कटक, भुवनेश्वर, सिलीगुड़ी में प्रारंभ हो गया। अभी पंजाब प्रांत व हरियाणा तथा दिल्ली प्रांत के कार्य में वनयात्रा की एक अहम भूमिका हो गयी है। कल्याण आश्रम की गंगोत्री जशपुर क्षेत्र के प्रकल्पों को देखने के लिए पूणे, नाशिक, नागपुर, कानपुर, आगरा, मुंबई के कार्यकर्ताओं द्वारा वनयात्राएँ लगातार होती रहती हैं। पाण्डुरंग ग. भांदकर के नेतृत्व में पूणे नगर के कार्यकर्ता जशपुर से चित्रकूट तक की यात्रा करते हैं। आनंद की बात यह है कि सभी वनयात्री मिलकर वनयात्रा का पूरा खर्च वहन करते हैं। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता उनके प्रांत में व प्रकल्पों पर ठहरने, भोजन व बैठकों की व्यवस्था करते हैं। पूरी वनयात्रा की अवधि संगठन से संबंधित देशभक्ति गीत, अनुभव कथन एवं समस्यायें सुनने में समाप्त हो जाती है। वन, झरने, वनवासी ग्राम, वनजीवन, वनवासी घर व वनवासी कल्याण के सेवा प्रकल्पों का दिग्दर्शन कार्यकर्ताओं के जीवन पर अमिट प्रभाव डालता है। बैठकों के क्रम में वनयात्रा का अनुभव कथन कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आज वनयात्रा कल्याण आश्रम की कार्यप्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

नगरीय कार्य हेतु आश्रम के अधिकारियों का प्रवास अति लाभकारी होता है। 8-10 दिवसीय प्रवास जिसमें दोनों पहर प्रतिदिन 2 बैठकें और एक बैठक में अधिकतम 10-11 लोगों की उपस्थिति रहती है। बैठकों की चर्चा व विषय प्रस्तुति से प्रभावित होकर नए कार्यकर्ता बनते हैं एवं धीरे-धीरे संगठनात्मक व्यवस्था में एक तंत्र के रूप में कार्य करना प्रारंभ कर देते हैं। उदयपुर, चित्तौड़,

जयपुर, भीलवाड़ा, जोधपुर, सूरत, बड़ौदा, अकलेश्वर, बलसाड़ तथा अहमदाबाद के कार्यकर्ताओं द्वारा वनयात्रा के कार्यक्रम व ऐसी ही छोटी-छोटी बैठकें आज सेवा प्रकल्पों के विस्तार में अति सहायक साबित हुई हैं।

नगर समिति का गठन उनका पंजीकरण, दूरभाष द्वारा या घर जाकर सम्पर्क-यही संगठन सूत्र बना है।

वार्षिकोत्सव - नगरीय कार्य का वार्षिकोत्सव भी एक प्रभावी माध्यम बना है। इसमें बच्चों के राष्ट्रभक्ति के गीत, महापुरुषों के जीवनी पर आधारित नाटक - प्रहसन, व बलिदानी महापुरुषों की जीवन झांकी आदि कार्यक्रम देशभक्त लोगों के लिए प्रेरणा का केन्द्र बनते हैं।

दवा व वस्तु संग्रह - देश के बड़े नगरों में दवा व वस्तु संग्रह के माध्यम से अच्छे लोग कल्याण आश्रम से जुड़ते हैं। इसी के माध्यम से नगर के चिकित्सक ग्रामों तक स्वास्थ्य शिविर हेतु पहुंचते हैं। अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। पुणे, नाशिक, नागपुर, रायपुर, दिल्ली, बिलासपुर, राँची व लोहरदगा के चिकित्सक बालासाहब जन्मशती समारोह के समय जशपुर के 101 ग्रामों में (जहाँ बालासाहब देशपांडे जी ने विद्यालय प्रारंभ किये थे वहां) 200 चिकित्सक कार्यकर्ता दो दिन के लिये पधारे। इस चिकित्सा शिविर में 101 स्थानों पर 40,000 रोगियों की चिकित्सा की गई। मकर संक्राति का वस्तु संग्रह कोलकाता व देश के अन्य नगरों में प्रभावी महिला कार्य प्रणाली का हिस्सा बना है।

कहा जा सकता है कि वनवासी के साथ एकात्मता बोध के भाव से कल्याण आश्रम का नगर संगठन नवीन प्रयोगों के साथ अग्रसर है। हम एकात्म राष्ट्र के अखण्डस्वरूप के उपासक हैं और यह अखण्डता तभी संभव है जब इस देश का सम्पूर्ण समाज (नगर व ग्राम) राष्ट्रहित में जागृत एवं संगठित हों। सर्वसाधारण व्यक्ति देश का हित और अहित पहचाने। ■

बंगाल-बिहार में बाढ़ से भीषण तबाही

पीड़ितों के लिए राहत कार्य

पश्चिम बंगाल एवं बिहार में भीषण बाढ़ से आई तबाही से लाखों लोग प्रभावित हुए हैं। लोग बेघर हो गये और भूख-प्यास से पीड़ित हैं। किशनगंज, पूर्णिया, अररिया, कटिहार जिले भयंकर बाढ़ की चपेट में आ गये हैं और इन सभी जिलों में वनवासी बहुत मात्रा में रहते हैं। मुस्लिम जनसंख्या अधिक होने कारण वे सरकार द्वारा भेजी गयी सहायता लूट रहे हैं और यह सभी अनैतिक कार्य संगठित होकर कर रहे हैं।

2) वनवासी हिन्दू बहुल इलाकों में मिशनरी भी सक्रिय हो गये हैं। कटिहार में संघ के स्वयंसेवक अपने स्तर पर आंशिक सहायता कर रहे हैं। इस संकट की घड़ी में सहायता व्यापक स्तर पर होनी चाहिए।

3) पूर्णिया में प्रदेश अध्यक्ष परमेश्वर मुर्मू के नेतृत्व में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र की जानकारी मिली। पूर्णिया में जिस क्षेत्र में बाढ़ का ज्यादा प्रभाव है उसमें वनवासी बंधुओं के 1200 परिवारों को तत्काल सहायता की आवश्यकता है। तिरपाल व पशुओं के लिए चारे की आवश्यकता है। अभी अररिया जिले की जानकारी के लिए कार्यकर्ता निकल रहे हैं। किशनगंज जिले से रेल व रोड मार्ग दोनों ही टूट गए हैं।

इस संकट की घड़ी का सामना करने हेतु बाढ़ पीड़ितों की सहायता एवं पुनर्वास हेतु कोलकाता महानगर से प्रचुर मात्रा में राहत सामग्री प्रेषित की गई। बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में 2000 मच्छरदानियां भेजी गई। चादरें, कपड़े, लालटेन, भोजन सामग्री, दवाइयाँ एवं दैनन्दिन उपयोग की वस्तुएं प्रचुर मात्रा में एकत्रित कर हमारे कार्यकर्ताओं ने भेजी हैं। राहत सामग्री भेजने का क्रम अनवरत रूप से जारी है। ■

दक्षिण बंग इकाई का अनूठा प्रयास
मल्लारपुर छात्रावास में सामूहिक विवाह का आयोजन

- संजय गोयल, सह-संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की दक्षिण बंग इकाई द्वारा गत 9 जुलाई को वीरभूम जिले के मल्लारपुर छात्रावास के प्रांगण में 21 वनवासी जोड़ों के सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। 100 गाँवों से 5000 वनवासियों ने इस आयोजन में शिरकत की। सभी 21 जोड़े संथाल जनजाति के थे । इनके विवाह को सामाजिक मान्यता न मिलने के कारण गाँव का कोई भी व्यक्ति उनके किसी भी कार्य में सम्मिलित नहीं होता था।

सामूहिक विवाह सन्थाल रीति-रिवाज के अनुसार सम्पन्न हुआ। केले के तने और आम के पत्तों से मंडप सजाया गया और एक साथ 21 जोड़ों को वेदी पर बैठाया गया। अक्षत, चन्दन, दूब व आम्रपल्लव से विवाह की धार्मिक क्रियायें पूरी हुई। नवीन जोड़ों से अग्नि के समक्ष फेरे लगवाये गये। मंत्रों का उच्चारण, मंगल पाठ, स्वस्तिवाचन आदि अनुष्ठान मुख्य पुजारी लक्खुराम किस्कू द्वारा किया गया। इस विवाह उत्सव का उद्घाटन उत्तर बंग के सहसभापति लक्खीराम टुडु के कर कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। आयोजन में अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख श्री शंकर जी अग्रवाल, दक्षिण बंग इकाई के मंत्री श्री चक्रधर सोरेन, सह-संगठन मंत्री श्री महादेव गोराई एवं उत्तम महतो, दक्षिण बंग इकाई के श्रद्धा जागरण प्रमुख श्री अशोक जाना, जिला संगठन मंत्री श्री सुशील सोरेन, सिउड़ी नगर के सभापति श्री विश्वनाथ दास तथा जिला समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे। मयूरेश्वर थाना समिति के सभी सदस्य एवं कोलकाता महानगर की विभिन्न समितियों से 70 कार्यकर्ता बंधु भगिनि एवं गोयल परिवार के 30 सदस्य भी 2 बसों द्वारा मल्लारपुर पहुंचे। सभी जोड़ों को दैनंदिन उपयोग के सामान यथा बिछौना, साड़ी, धोती, आवश्यक बर्तन, मच्छरदानी, छाता, विवाह के समय पहनने के वस्त्र एवं सौंदर्य प्रसाधन आदि दिये गये। विवाह की संपन्नता के पश्चात् सब लोगों को जमीन पर बैठाकर मनुहारपूर्वक स्वादिष्ट भोजन करवाया गया।

उल्लेखनीय है कि सामूहिक विवाह का यह प्रेरणादायी भव्य आयोजन कोलकाता महानगर के कार्यकर्ता श्री संजय गोयल एवं श्री योगेश गोयल के पूज्य पिताश्री एवं मातु श्री श्री सत्यनरायण-गीता देवी गोयल के विवाह की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष पर किया गया एवं इन्होंने ही इस भव्य आयोजन की आर्थिक जिम्मेदारी वहन की। विवाह समाप्ति के पश्चात सभी वनवासी जोड़ों को प्रमाण पत्र दिये गये जिसमें युगल दम्पती का चित्र एवं मुख्य पुजारी के हस्ताक्षर थे। सभी के लिए यह आयोजन बहुत ही सुखद एवं प्रेरक रहा। ■

अमृत वचन

- न तो कष्टों को निमंत्रण दो और न उनसे भागो। जो आता है, उसे झेलो। किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। *- स्वामी विवेकानन्द*
- जीवन में कठिनाइयां हमें बर्बाद करने नहीं आती है, बल्कि ये हमारी छुपी हुई शक्तियों और सामर्थ्य को बाहर निकालने में हमारी मदद करती हैं। कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उनसे भी ज्यादा कठिन हो। *- एपीजे अब्दुल कलाम*

कोलकाता- हावड़ा महानगर का 26 वां नैपुण्य शिविर

- शशि मोदी, सह-संगठनमंत्री, महानगर महिला समिति

वही वृक्ष दीर्घजीवी होता है जिसकी जड़ें मजबूत होती है। संगठन की दीर्घजीविता के लिए कार्यकर्ता रुपी जड़ों की मजबूती आवश्यक है। सक्षम, समर्पित, सुयोग्य कार्यकर्ता ही संस्था को सशक्त बना सकते हैं, इसी पवित्र भाव से अनुप्राणित होकर कोलकाता एवं हावड़ा महानगर के कार्यकर्ता वर्ष में एक बार अपने परिवार से दूर मनोरम, नैसर्गिक प्राकृतिक परिवेश में एकत्रित होते हैं एवं विभिन्न बौद्धिक तथा चर्चात्मक सत्रों के माध्यम से व्यक्तिगत एवं सांगठनिक रूप से अपनी योग्यता एवं निपुणता में वृद्धि करते हैं। कोलकाता हावड़ा महानगर का 26 वां नैपुण्य वर्ग हमीरागाछी के काशी विश्वनाथ सेवा समिति के प्रांगण में गत 2-3 सितम्बर को संपन्न हुआ। कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन हेतु अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री कृपाप्रसाद सिंह, अखिल भारतीय कन्या छात्रावास प्रमुख सुश्री तपसी मैत्र, अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख श्री शंकरलाल अग्रवाल एवं दक्षिण बंग प्रांत के सह संगठन मंत्री श्री महादेव गोराई पूरे समय उपस्थित थे। वर्ग का उद्घाटन 2 सितम्बर को प्रात: 10 बजे भारतमाता एवं हमारे संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय बालासाहब देशपांडे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। कुल 9 सत्रों में नगरीय कार्यों की आवश्यकता, संगठन में कार्यकर्ताओं की भागीदारी, देश भर में चल रहे कन्या छात्रावासों की स्थिति एवं प्रभाव, कल्याण आश्रम के कार्य का समाजहित एवं राष्ट्रहित में प्रभाव आदि विषयों पर अधिकारी वक्ताओं ने उद्बोधन दिया। चर्चात्मक सत्र में कार्य विस्तार एवं कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव आये। वनवासी की समस्याओं को हम कैसे देखते हैं एवं इनके हल के लिए किन उपक्रमों का आयोजन किया जाता है आदि बातों को दृश्य-श्रब्य प्रस्तुति के माध्यम से युवा समिति के कर्मठ कार्यकर्ता पीयूष अग्रवाल एवं मोहित चौधरी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से बताया। श्री निर्मल अग्रवाल ने जल संरक्षण के महत्व एवं विधि पर प्रकाश डाला। कार्यकर्ताओं की सहभागिता, सक्रियता एवं सकारात्मकता किस प्रकार बढ़े, इस विषय पर हावड़ा महानगर के सह-संगठन मंत्री श्री मनोज अग्रवाल ने प्रकाश डाला। राजीव दीक्षित मेमोरियल फांउडेशन के सक्रिय कार्यकर्ता श्री नितिन शर्मा ने 'हमारी संस्कृति एवं स्वास्थ्य' विषय पर बहुत सुन्दर विवेचन किया। हमारी संस्कृति में अनादि काल से स्वास्थ्य के सूत्र अनुस्यूत हैं। उपभोक्तावाद एवं पाश्चात्य जीवन शैली की दौड़ में हम उन्हें भुला बैठे हैं। आयुर्वेद, स्वदेशी, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के सहारे अपनी जड़ों से जुड़कर ही हम अपने व्यक्तित्व को पवित्र एवं उर्ध्वगामी बना सकते हैं। नितिन जी ने गौमाता का महत्व बताते हुए कहा कि चैतन्य हमें गौमाता से प्राप्त हुआ है। गाय सर्वतीर्थमयी, सर्वदेवमयी विश्व माता है। प्रभु जिसे अपना मानते हैं, निजी मानते हैं उन्हें गोसेवा में लगाते हैं। मनोरंजन सत्र, खेलकूद, गीत एवं सामूहिक भोजन आदि ने कार्यकर्ताओं के बीच पारिवारिक प्रेम की सृष्टि की। 'भारत मां की संतानें हम शीश झुकाना क्या जानें' - शिविर गीत की भावना कार्यकर्ताओं की आंखों एवं हृदयों में चरितार्थ हुई। सभी कार्यकर्ता अति उत्साह एवं प्रेरणा लेकर 3 सितम्बर रात्रि को अपने-अपने घर लौटे। इस शिविर का कुशल संचालन कोलकाता महानगर मंत्री श्री संदीप चौधरी ने किया। ■

हावड़ा महानगर के कार्यक्रम

- कुसुम सरावगी, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

मध्य हावड़ा महिला समिति का सिंधारा उत्सव

गत 29 जुलाई को मध्य हावड़ा महिला समिति की बहनों ने हरियाली तीज की थीम पर स्थानीय श्रीराम सभागार में सिंधारा उत्सव आनन्दपूर्वक मनाया। कार्यक्रम में लगभग 55 महिलाएं उपस्थित रहीं।

श्री रानी सती दादी का मंगल पाठ

श्री दादी के मंगल पाठ का संवाद मिलते ही स्थानीय धर्मप्रेमी महिलाओं में मंगल में आने की होड़ सी मच गई। गत 30 अगस्त को उत्तर हावड़ा महिला समिति के तत्वावधान में 'रानी सती दादी' के मंगल पाठ का आयोजन हुआ जिसमें 300 से अधिक महिलाएं उपस्थित रही। रानी सती दादी के प्रति जन-जन में अपार आस्था है। वे अपने पति और धर्म की रक्षा के लिए ही सती हुई थीं। पाठ वाचिका श्रीमती सीता जी लोहिया ने अत्यंत प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुति दी। दादी का जन्म,

बचपन की अठखेलियाँ, हल्दी, गरबा, बारात, विवाह आदि सभी कार्यक्रम नृत्य नाटिका द्वारा प्रस्तुत किये गये। पाठ के मध्य में श्रीमती स्नेहलता बैद के भावपूर्ण वक्तव्य ने लोगों को कल्याण आश्रम से परिचित कराया एवं कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया। उमंग और उत्साह से परिपूर्ण इस कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया।

उत्तर हावड़ा महिला समिति का सिंधारा उत्सव

गत 15 जुलाई 2017 पूर्वांचल कल्याण आश्रम की उत्तर हावड़ा महिला समिति का सिंधारा उत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें 'साउथ इंडियन' थीम रखी गयी थी। कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं के अलावा अतिथि महिलाओं एवं लड़कियों की संख्या 110 के करीब थी। कार्यक्रम का संचालन शर्मिला अग्रवाल ने बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से किया। नृत्य, खेल, नाटिका एवं चटपटे व्यंजनों का सभी ने लुत्फ उठाया और कार्यक्रम को खूब सराहा।

चिकित्सा शिविर का आयोजन

उत्तर हावड़ा पुरुष समिति द्वारा गत 23 जुलाई को मेडिकल कैम्प खड़गपुर के नारायणगढ़ में आयोजित

हुआ जिसमें यहां के कार्यकर्ताओं के साथ 6 डॉक्टरों ने भाग लिया। डॉ. ललित बैद तो अपने परिवार के साथ आए और सेवाएं प्रदान की। उन्होंने अपना जन्मदिन 300 पैकेट मिठाई एवं केक मरीजों को वितरण करके अनूठे तरीके से मनाया। कैम्प में मरीजों की संख्या 400 रही और सभी मरीज संतुष्ट होकर गये। इस अवसर पर डॉ. ललित बैद ने कल्याण आश्रम को सहयोग राशि के रूप में एक चेक भी प्रदान किया। ■

राष्ट्रीय एकात्मता का अनुष्ठान : रक्षाबंधन

- शकुन्तला बागड़ी, अध्यक्षा, महानगर महिला समिति

भारतीय संस्कृति का अन्यतम पर्व है रक्षाबंधन। देश भर में वनवासी कल्याण आश्रम की कई नगर समितियां कार्यरत हैं। हजारों नगरीय कार्यकर्ता अपने वनवासी बंधुओं के विकास हेतु अनवरत प्रयास करते हैं। हजारों लाखों वनवासी परिवारों को गाँव-गाँव में जाकर मिलते हैं और परिवार के सभी सदस्यों को रक्षा सूत्र में बांधते हैं। कोलकाता महानगर की बहनें स्थानीय कल्याण भवन कार्यालय में जाकर कल्याण आश्रम के सभी सेवाव्रती अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को राखी बांधकर आंतरिक आह्लाद एवं संतोष का अनुभव करती हैं। वनवासी कल्याण आश्रम का बोध वाक्य है *'तू-मैं एक रक्त'*। आपकी और मेरी रगों में एक ही रक्त बह रहा है। परिचय देते समय चाहे हम अलग-अलग परिचय भले ही देते होंगे परन्तु दोनों में भेद नहीं है। रक्षाबंधन इसी बात को उत्सव के रूप में समझाता है। बाहरी दिखने वाले भेदों को दूर कर एकत्व की अनुभूति कराता है। रक्षाबन्धन का यह रक्षा-सूत्र हमें वनवासी समाज के स्वाभिमान की रक्षा के लिए उनके स्वास्थ्य, शिक्षा एवं स्वावलम्बन की दिशा में चिन्तन की प्रेरणा देता है।

इस वर्ष रक्षाबंधन उत्सव कोलकाता महानगर की बहनों के लिए विशेष रूप से स्मरणीय एवं प्रेरणादायी रहा। पूर्व राज्य सभा सांसद श्री तरुण विजय जी ने फोन कर उत्तर-पूर्व सीमा पर तैनात सैनिकों के लिए 5 हजार राखियाँ भेजने को कहा। बहनों द्वारा निर्मित राखियाँ सैनिकों की कलाई पर सजेगी, इस भाव से ही बहनें गद्‌गद् हो गई। मात्र 3 दिनों में 9 हजार राखियां तैयार की गई। न सिर्फ राखियाँ अपितु राखी के साथ सैनिक भाई के लिए अपने हाथ से लिखकर शुभकामना संदेश भी भेजे। महानगर की 4 बहनों- श्रीमती शकुंतला बागड़ी, शशी अग्रवाल, सुनीता मूंदड़ा एवं सुप्रिया बैद- ने स्वयं जाकर सैनिकों की कलाई पर राखी बांधने का मन बनाया। बहनों को गैंगटोक पुलिस गेस्ट हाउस में ठहराया गया। सैनिकों का आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य सबको अभिभूत कर गया। अपने हाथों से मातृभूमि की रक्षा को तत्पर सैनिकों को राखी बांधने का आनंद सचमुच अनिर्वचनीय है। उन चन्द प्रतिनिधि बहनों के साथ कल्याण आश्रम से जुड़ी सैकड़ों बहनों की भावनाएं हैं; देश की करोड़ों माताओं बहनों के आशीर्वाद, स्नेह, शुभकामनाएं और प्रणाम जुड़े हैं। सैनिक सीमा पर डटा है, देशवासियों की सुरक्षा के लिए। सैनिक रातों में चौकस जागता है, हम करोड़ों की निरापद नींद के लिए। सैनिक सर्दी, गर्मी, बारिश और तूफान में डटा रहता है कि हम चैन से रह सकें। सैनिक सीमाओं पर गोली खाता है, ताकि हम दीवाली-ईद-होली खुशी-खुशी मना सकें। सैनिक के दम पर देश का मान पूरी दुनिया में ऊँचा है। सैनिक की कलाई पर राखी उसके लिए प्रेम और सम्मान का प्रतीक है। सैनिक के माथे पर तिलक देश का प्रणाम है। सैनिक को राखी बाँधने का सौभाग्य जिन्हें मिला, वे बहनें धन्यता का अनुभव करती हैं। सैनिकों को भेजे गये शुभकामना संदेश की कुछ बानगी.....

देश की रक्षा हित बन्धन,स्वीकार करो मम भैया।
बन कर काल शत्रु के, धन्य करो निज मैय्या।।

.....

यही है शुभ संकल्प, तिरंगा ऊंचा लहराए।
जयकारे भारत मां के, सारी दुनिया गुंजाए।।

इन राखियों के माध्यम से हमने संदेश दिया कि पूरा देश हर वीर सैनिक के साथ है। सैनिकों के आंखों में यह भाव स्पष्ट रूप से पढ़ा गया कि सवा अरब भारतीयों की शक्ति उसकी कलाई पर बंधी है। स्नेह और प्रेम की इस निर्मल धारा ने हम सबको आप्यायित और प्रेरित किया। ■

प्रेरक प्रसंग

नाग्या क्रांतिकारी का जीवन चरित्र
पाठ्य पुस्तक में समाहित

हम इतिहास में छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप को जानते हैं। स्वतंत्रता सेनानी के रुप में लाल-बाल-पाल को जानते हैं। सुभाषचंद्र बोस और भगतसिंह को जानते हैं परन्तु ऐसे अनगिनत वनवासी वीर योद्धा हैं जिन्हें इतिहास के माध्यम से विद्यालयों में न तो पढ़ाया जाता है, न भावी पीढ़ी की प्रेरणा के रुप में बालकों को बताया जाता है। जिन्होंने देश-धर्म-संस्कृति के लिए अपने प्राण दिये ऐसे वनवासी वीरों के बारे में लेखन होना चाहिए, यह समय की आवश्यकता है और जो लिखा हुआ उपलब्ध है उसे विद्यालयों में पढ़ाया जाए, ये भी आवश्यक है।

महाराष्ट्र के अपने कार्यकर्ता *अनिल वाघमारे* ने वीर नाग्या क्रांतिकारी के बारे में एक पुस्तक लिखी। कुछ दिन पूर्व प्राप्त समाचार के अनुसार महाराष्ट्र सरकार ने इसी पुस्तक से नाग्या क्रांतिकारी के जीवन के बारे में कुछ अंश कक्षा 9 की पुस्तक में समाहित किये हैं। कल्याण आश्रम परिवार की ओर से हम अनिल वाघमारे और महाराष्ट्र सरकार को इस प्रेरणादायी पहल के लिए अभिनंदन प्रेषित करते हैं।

जनजाति छात्रों ने किया रक्तदान

वनवासी समाज के बारे में कई प्रकार की गलत धारणाएं हम सुनते होंगे। उसमें से एक है कि जनजाति समाज में रक्तदान करने की मानसिकता नहीं है। परन्तु दिल्ली छात्रावास के अपने दो छात्रों ने प्रदेश सहमंत्री आनन्द भारद्वाज जी के मार्गदर्शन पर दिनांक 18 जुलाई को रक्तदान किया। फेरेंगा नारजारी ने 350 ग्राम और बिपुल चकमा ने 450 ग्राम रक्तदान कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इन दोनों युवकों की आयु 18 वर्ष है। ■

वनवासी विकास समिति, भिलाई
'लक्ष्य प्रकल्प'

छत्तीसगढ़ के वनांचल में सिविल सेवा हेतु संकल्पित वनवासी विकास समिति के 'लक्ष्य प्रकल्प' ने छत्तीसगढ़ की औद्योगिकी नगरी भिलाई के युवा तरूणाईयों को छत्तीसगढ़ लोक सेवा परीक्षा के लिए मार्गदर्शित करने का कार्य निरंतर जारी रखा है।

इस वर्ष 28 मई 2017 को 70 छात्र-छात्राओं के साथ तीन-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 3 दिनों तक अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा छत्तीसगढ़ लोक सेवा परीक्षा की तैयारी हेतु मार्गदर्शन दिया गया। 1 जून 2017 से निरंतर कक्षाएं प्रारंभ हुई जिसमें 50 छात्र-छात्राएं पंजीकृत हुए।

प्रतिभावान युवाओं को सिविल सेवा हेतु आकर्षित करने के लिए महाविद्यालय में नि:शुल्क कोचिंग पात्रता परीक्षा का आयोजन 10 जून 2017 को किया गया जिसमें लगभग 350 छात्र-छात्राएं शामिल हुए।

नि:शुल्क कोचिंग पात्रता परीक्षा में प्रशिक्षण हेतु 20 छात्र-छात्राओं का चयन करने का लक्ष्य लिया गया। वनवासी विकास समिति के संचालक संतोष परांजपे ने इस महत्वाकांक्षी पहल के विषय में चर्चा करते हुए बताया कि इस पात्रता परीक्षा से चयनित छात्र-छात्राएं राज्य लोक सेवा परीक्षा में चयनित होकर प्रदेश का गौरव बढ़ायेंगे।

समिति सदस्य डॉ. शकील हुसैन ने बताया कि शीघ्र ही परीक्षा परिणाम घोषित कर चयनित विद्यार्थियों के साथ समिति की बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें परीक्षा की तैयारी संबंधी रूपरेखा तय होगी। संस्था के 25 छात्र-छात्राओं में से 7 विद्यार्थी छत्तीसगढ़ मुख्य परीक्षा 2017 में सम्मिलित हुए। ■

लेकटाऊन महिला समिति द्वारा राखी मेला का आयोजन

- शकुन्तला अग्रवाल, सहसंगठन मंत्री, कोलकाता महिला समिति

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमने अपना तीन दिवसीय राखी मेला का आयोजन (15-17 जुलाई 2017) किया था। यह हमारा 24 वां राखी मेला था। आगामी वर्ष रजत जयंती वर्ष होगा। कुल 42 स्टॉल थे जिनमे विभिन्न प्रकार की सामग्री थी। राखी गिफ्ट्स, साड़ियाँ, गहने, प्रसाधन सामग्री, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ आदि विभिन्न प्रकार के स्टॉल सजे थे। एक स्टॉल कल्याण आश्रम का भी था जिसमें वन क्षेत्रों से आयी हुई वस्तुएं शहद, इमली एवं वनवासी बालिकाओं द्वारा निर्मित मोतियों की बंदनवार, लेस आदि सामग्री रखी गई।

तीन दिन में लगभग 2500-3000 लोगों का आवागमन होता है। काफी अच्छी बिक्री होती है। सभी स्टॉल होल्डर बहुत खुश होकर जाते हैं। शहरी समाज को वनवासी कार्य की जानकारी प्राप्त होती है। कुल मिलाकर यह एक सफल आयोजन होता है। समिति के सभी कार्यकर्ता प्रदर्शनी की सफलता हेतु अनथक श्रम करते हैं।

कई स्टॉल होल्डर तो इतने प्रभावित होते हैं कि सहयोगकर्ता बन जाते हैं। कुछ बहनें कार्यकर्ता के रूप में भी संगठन से जुड़ती हैं। ज्ञातव्य है *कि इस प्रदर्शनी की समस्त आय गोसाबा में निर्माणाधीन प्रीतिलता छात्रावास हेतु समर्पित कर दी गई।* ■

कोलकाता महानगर महिला समिति का सिंधारा उत्सव

-आशा जैन, बड़ाबाजार महिला समिति

यों तो वर्ष के 12 महीने, पर महीना तो सावन ही सुहावन मनभावन है। इसी से जन मानस इसे रंगीला सावन कहता है। रिमझिम फुहारों वाला सावन मास प्रकृति पक्ष और लोकपक्ष लेकर हाजिर होता है हमारे बीच। आकाश से बादल अमृत बूंदे बरसाते हैं और धरती पर लोक कंठ से फूटती है लोक गीतों की रसधारा। सावन की रिमझिम बारिश, चतुर्दिक फैली हरीतिमा और शीतल बयार के झोंकों के बीच कौन स्पन्दित नहीं होता होगा। धरती भी नववधू की तरह सज जाती है। ऐसे मनभावन मौसम में महानगर महिला समिति की बहनों ने गत 22 जुलाई को कल्याण भवन में सिंधारा उत्सव का आयोजन किया। गीत, नृत्य एवं नाटिकाओं द्वारा भरपूर मनोरंजन एवं हास-परिहास होता रहा उस दिन। झूला झूलते-झूलते कब रात घिर आई, पता ही नहीं चला। कार्यक्रम के पश्चात् सुस्वादु भोजन की व्यवस्था थी। इस आनन्दपूर्ण कार्यक्रम में महानगर की सभी समितियों से बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 150 से अधिक महिलाओं की उपस्थिति रही। पूरे आयोजन का व्यवस्था पक्ष बड़ाबाजार समिति ने मनायोग पूर्वक संभाला। कार्यक्रम समाप्ति पर सभी बहनों को प्रतीक रूप से चोलिया भेंट किया गया। ■

आगामी कार्यक्रम

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता-हावड़ा महानगर इकाई का 38 वां वार्षिकोत्सव स्थानीय कलामंदिर में आगामी 17 दिसम्बर 2017 को आयोजित किया जायेगा।

काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा विष्णु सहस्त्रनाम

- जामवंती गोयनका, काकुड़गाछी समिति

27 जुलाई को काकुड़गाछी समिति की बहनों ने कल्याण भवन में विष्णु सहस्त्रनाम (तुलसी अर्चना) व श्री सूक्त पाठ (लक्ष्मी जी का पाठ) करवाया। स्वाध्याय परिवार की बहनों ने बहुत सुन्दर एवं मधुर स्वर शुद्ध उच्चारण सहित पाठ किया। इस कार्यक्रम के फलस्वरूप अनेक नई महिलायें संगठन कार्य से जुड़ीं। इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणि दास शर्मा की उपस्थिति ने कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया। ■

मॉडर्न खो-खो का प्रशिक्षण वर्ग

खेलकूद आयाम के अंतर्गत खो-खो कई वर्षों से खेला जाता है परन्तु अब यह मॉडर्न खो-खो का जो प्रचलन बढ़ा है तो कल्याण आश्रम ने इसके प्रशिक्षण का आयोजन 2 जून से 4 जून 2017 तक उड़िसा के सुन्दरगढ़ जिले में किया। खो-खो प्रशिक्षण हेतु इन्दौर से मुकुन्द द्रविड़ आये थे। कुल 12 प्रांतों से 27 वनवासी खिलाड़ियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

स्वतंत्रता दिवस पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

- पीयूष अग्रवाल, शिक्षा प्रमुख, युवा समिति

- किस राष्ट्रपति ने आपातकाल के कागजात पर हस्ताक्षर किए?
- भारत ने अमेरिका से हाल ही में कौन से टैंक खरीदे?
- कल्याण आश्रम के संस्थापक का पूरा नाम क्या है?

यदि इन प्रश्नों का उत्तर आपको नहीं पता तो आपने पूर्वांचल कल्याण आश्रम की क्विज प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया है। यों तो प्रतिवर्ष पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता-हावड़ा महानगर ईकाई द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देशभक्ति गीत प्रतियोगिता आयोजित की जाती है लेकिन कुछ वर्षों से इसमें बदलाव का अनुरोध नगर समितियाँ कर रही थीं। कार्यक्रम में नवीनता समितियों का उत्साह भी बढ़ाती है। श्री मनोज अग्रवाल को इसका दायित्व दिया गया। मनोज जी ने एक क्विज प्रतियोगिता का प्रस्ताव रखा जिसमें वनवासी कल्याण आश्रम के अतिरिक्त भारतीय तकनीकी-प्रौद्योगिकी विकास से संबंधित प्रश्न एवं सामयिक प्रश्न भी रहेंगे।

13 समितियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी समितियों को 20 प्रश्नों का पर्चा दिया गया। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाली 7 समितियाँ अगले दौर में पहुँची। वनवासी क्रांतिकारी, राजनीति, विज्ञान-तकनीक और खेल को केन्द्रित कर 4 राउण्ड हुए। सभी समितियां जीतने का भरपूर प्रयास कर रही थी। हर राउण्ड के अंत में दर्शकों से भी प्रश्न पूछे गये। सही उत्तर देने पर छोटी सी भेंट भी दी गई। चौथे दौर के अंत में बागबाजार समिति और युवा समिति को समान अंक प्राप्त हुए। टाई ब्रेकर में तीन प्रश्न पूछे गए और बागबाजार समिति ने बाजी मार ली।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम का यह स्वतंत्रता दिवस समारोह बहुत रोचक रहा। इसे रुचिकर बनाने के लिए सभी समितियों से आयोजकों को बधाइयाँ मिली। ■

वनवासी समाज का गौरव पुरुष : कोटिया भील

- श्रीराम भील

हाड़ौती के सौन्दर्य को चार चांद लगाने वाली मुकन्दरा पर्वत श्रेणियाँ एवं चर्मण्यवती (चम्बल) नदी के किनारे बसा वर्तमान शहर कोटा (अकेलगढ़) अपने आप में कई रहस्य एवं इतिहास दबाए निरन्तर शैक्षिक, औद्योगिक एवं अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाता जा रहा है।

लेकिन बारहवीं एवं तेरहवीं सदी के उस गौरवपूर्ण इतिहास को शायद बहुत कम व्यक्ति ही जानते हैं जब इस शहर की स्थापना एवं नामकरण हुआ। 1246 ईस्वी में वनवासी सरदार कोटिया भील का इस पूरे क्षेत्र पर आधिपत्य था। इस समयावधि को सरदार कोटिया भील एवं जनजाति का स्वर्णिम काल कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसी काल में कोटिया भील ने अपनी राजधानी के रूप में अकेलगढ़ (प्राचीन कोटा शहर का नाम जो चम्बल नदी के किनारे खण्डहर के रूप में आज भी मौजूद है) की स्थापना की जो इतना मजबूत एवं अभेद्य है कि आज भी पर्यटक देखकर दंग रह जाते हैं।

अपने शासन काल में कोटिया भील ने अपने आराध्य देव भगवान शिव का *नीलकण्ठ महादेव मन्दिर* निर्माण करवाया जो आज भी बेजोड़ है। सरदार कोटिया भील का संघर्ष उस समय अपनी आसपास की रियासतों यथा-बूँदी, झालावाड़ (गागरोन), बारां के शासकों से चलता रहता था तथा ये सभी इनकी बहादुरी एवं छापामार युद्ध कला से प्रभावित थे। 1325 में सरदार कोटिया भील के नाम पर कोटा शहर के नामकरण की गौरवपूर्ण घटना को इतिहासकार एवं स्थानीय वनवासी समाज के लोग आज भी बताते हुए एवं याद करते हुए रोमांचित हो जाते हैं। इतिहास में दर्ज घटना इस प्रकार है कि सरदार कोटिया भील के पास वही पुराने तीर कमान, गोफन एवं भाले तथा कुछ जनजाति के छापामार सैनिक ही हुआ करते थे। फिर भी वे बूँदी के शासक की सेना को छापामार युद्ध द्वारा खदेड़ दिया करते थे। घटना के अनुसार एक बार बूँदी के शासक जैतसिंह ने पड़ोसी शासकों की मदद लेकर भारी संख्या में सेना द्वारा सरदार कोटिया भील की राजधानी अकेलगढ़ को घेर लिया तथा दोनों ओर से भीषण युद्ध होने लगा। बूँदी के शासक अपनी विशाल सेना के साथ हाथी पर संवार होकर युद्धरत थे जबकि दूसरी ओर सरदार कोटिया भील पैदल ही अपने कुछ वनवासी भील सैनिकों के साथ युद्ध कर रहा था। दोनों ओर से मार काट एवं हाहाकार मची हुई थी।

कहते हैं कि सरदार कोटिया भील ने अपने कुछ सैनिकों के साथ बहुत समय तक युद्ध किया लेकिन उसके साथियों की लगातार मृत्यु होती गई फिर भी वह अकेला इतनी बड़ी सेना से लोहा लेता रहा। अंत में घायल अवस्था में बूँदी के शासक जैत सिंह के सेनापति ने पीछे से धोखे से उसका सर धड़ से अलग कर दिया। फिर भी वह काफी समय तक

दोनों हाथों से मार काट मचाता रहा जब तक कि विरोधियों ने उसके सारे अंगों को नहीं काट डाला।

कहते हैं कि धड़ जमीन पर गिरने से पहले एवं अन्तिम सांस लेने से पहले उसने अपने हत्यारे बूँदी के शासक से भाला छीन सेनापति को भाले द्वारा मौत के घाट उतार दिया था। *उसकी इस वीरता को देखकर युद्ध में सम्मिलित बूंदी के शासक राव जैतसिंह उससे इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने अपने जीते हुए नगर का नाम सरदार कोटिया भील के सम्मान-स्वरूप कोटा रख दिया। तभी से प्राचीन अकेलगढ़ वर्तमान कोटा शहर के रूप में अस्तित्व में आया।*

आज भी सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र में जनजाति समुदाय के लोग सरदार कोटिया भील को अपना गौरव पुरुष मानते आ रहे हैं तथा अकेलगढ़ में प्रतिवर्ष उसकी याद में मेला लगता है जिसमें पूरे हाड़ौती क्षेत्र का जनजाति समुदाय बड़ी संख्या में भाग लेता है।

आदिवासी विकास संस्था द्वारा सरदार नगर विकास न्यास कोटा एवं प्रशासन की मदद से 15 सितम्बर 2013 रविवार को कोटा के रंगबाड़ी चौराहा के वाई जोन पर कोटा के संस्थापक वीर पुरुष सरदार कोटिया भील की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

सैकड़ों वर्षों बाद हाड़ौती के वनवासी समाज की यह मांग पूर्ण हुई तथा उनके गौरव पुरुष सरदार कोटिया भील एवं कोटा के संस्थापक कोटिया भील की मूर्ति लगाने का सपना साकार हुआ।

इस अवसर पर सरकार नगर विकास न्यास कोटा एवं सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र के लगभग 10 हजार लोगों ने भाग लिया तथा उपस्थित वनवासी समुदाय द्वारा अपने गौरव पुरुष की शपथ लेकर बुराइयाँ त्यागने एवं शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़कर समाज और देश के विकास में अपनी भागीदारी बढ़ाने का सामूहिक संकल्प लिया गया। ■

शोक संवाद

- परम गौभक्त, संघ धारा से ओतप्रोत निष्काम कर्मयोगी, प्रबुद्ध चिंतक, समाज के प्राण-पुरुष एवं ऊर्जा-स्रोत वयोवृद्ध श्रद्धेय श्री शिवभगवान जी बगड़िया का 9 अगस्त 2017 को महाप्रयाण हो गया। उनका पूरा जीवन गौमाता की नि:स्वार्थ सेवा को समर्पित रहा। स्पष्टवादिता, नि:स्वार्थ भाव, सफल नेतृत्व एवं कुशल प्रशासक के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। किसी भी विशेष परिस्थिति में आप हिम्मत नहीं हारते थे बल्कि कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार करते थे।
- बड़ाबाजार महिला समिति की सह संयोजिका श्रीमती उषा तापड़िया का लम्बी बीमारी के पश्चात दिनांक 13 अगस्त को अपने निवास स्थान पर ही निधन हो गया। वे बहुत ही कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ता थीं।
- वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्व पूर्णकालीन कार्यकर्ता *श्री अनिल होलसमुद्रकर* का शरीर शांत हो गया। आप पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे। उपचार हेतु पूना के एक अस्पताल में उन्हें भर्ती किया गया। वहीं पर 22 जून 2017 को उनका दु:खद निधन हुआ। श्री अनिल जी और उनकी पत्नी श्रीमती अरुणा दोनों ने वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। प्रारंभ में वे जशपुर आए और बाद में तत्कालीन महाकौशल प्रांत में कई वर्षों तक कार्यरत रहे।
- कोलकाता महानगर उत्तर नगर के पूर्व अध्यक्ष *श्री केशव राम जी सराफ* का विगत 2 अगस्त 2017 को गोलोकवास हो गया। वे कई वर्षों से गंभीर रूप से अस्वस्थ थे। आप मृदुभाषी, कर्मठ एवं सामाजिक व्यक्तित्व के धनी थे।

कल्याण आश्रम परिवार सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से उनकी चिर शान्ति की कामना करता है। ■

हमारी संस्कृति हमारा स्वास्थ्य

- नितिन शर्मा, सदस्य राजीव दीक्षित मेमोरियल फाऊडेशन

कहावत है पहला सुख निरोगी काया परन्तु आज के इस मशीनी युग में पूर्ण रूप से निरोगी काया तो मात्र स्वप्न रह गयी है। आजकल का जो खान पान है वह सारे रोगों की जड़ बन बैठा है क्योकि हम रिफाइंड खाद्य पदार्थो का उपयोग करने लगे हैं। जैसे चीनी रिफाइंड, तेल रिफाइंड घी रिफाइंड, मैदा आटा रिफाइंड, यहाँ तक कि पानी को भी रिफाइंड कर RO का पानी पिया जा रहा है। और इन का उपयोग कर हम कैंसर, शुगर, BP, अर्थराइटिस जैसी कई भयानक बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं।

जब कोई भी खाद्य पदार्थ को रिफाइंड किया जाता है तो उसके पोषक तत्व को निकाल लिया या जला दिया जाता है और जब वो हमारे शरीर में जाता है तो इसे पचाने के लिए शरीर के सभी आवश्यक मिनरल जैसे VIT-D, VIT -B-12, VIT-B-17 केल्शियम मैग्नेशियम पोटेशियम ऑयरन शरीर से लेने लगता है और इन तत्वों की कमी के कारण जीवन भर रोगों को झेलते रहते हैं।

इस सभी रोगों से छुटकारा पाने का आसान तरीका है- *मोटा खाओ, सभी रिफाइंड पदार्थों को जीवन से दूर भगाओ।*

इसके लिए कुछ आसान उपाय बता देता हूं-

- सुबह जल्दी उठें । उठने के बाद गुनगुना पानी पीएं और घूंट-घूंट कर पीएं। जिससे जोड़ों के दर्द, मुँह के सभी रोग, कब्ज और हृदय सबंधी रोगों में लाभ मिलेगा।
- दांतो को साफ करने के लिए दातुन का उपयोग करें।
- खाना खूब चबाकर खायें । खाने के बाद पानी ना पीएं।
- सुबह जूस, दोपहर छाछ ओर रात्रि को दूध का सेवन करें।
- अगर देसी गाय का दूध है तो पीएं वरना छोड़ देवें।

भोजन पकाने के सही पात्र

मिट्टी, पीतल (खट्टा वर्जित),कांसा(खट्टा वर्जित), लोहा, स्टील के बर्तन भोजन पकाने व खाने के लिए उपयुक्त है।

- एल्यूमिनियम और नॉनस्टिक बर्तन भोजन पकाने के लिए हानिकारक है। प्लास्टिक में गर्म वस्तु न रखें।
- दैनिक जीवन में हमेशा सेंधा नमक खायें।
- ठंडे पानी का सेवन हृदय रोग का कारण है। पानी हमेशा शरीर के तापमान के हिसाब से पीएं।

कुछ घरेलू उपचार

- उच्च रक्तचाप के सभी रोगी बेल पत्र के पत्तों का उपयोग करें। 7 पत्तों को 400 एम एल पानी में उबालें और 100 एमएल होने पर खाली पेट पी लेवें। एक से डेढ़ महीने में दवा भी छूट जाएगी।
- जिनका रक्तचाप कम है वे आधा चम्मच सेंधा नमक को पानी में घोल कर पी लेवें या माखन मिश्री (देसी माखन और देशी मिश्री) खाली पेट खा लेवें ।
- देसी गौमाता के सिर से पूँछ तक 5 मिनट तक हाथ फेरे और परिणाम तत्काल पाएं।
- गौ माता का पंचगव्य घी नाक, नाभि और कान में डालने से सर्दी, माइग्रेन, नाक का मांस बढ़ना, खून आना, खर्राटे लेना, बालों का झड़ना, कम सुनाई देना आदि रोगों में फायदेमंद है। यह लीवर और किडनी को बचाता है और दिमाग को तेज करता है।
- गौ अर्क का उपयोग करने से जॉन्डिस A,B,C,D,E,F बड़ी आसानी से ठीक हो जाते हैं।
- थॉयरायड के लिए धनिया पत्ती का एक चम्मच रस बिना कुछ मिलाये सुबह गर्म पानी के साथ लेने से दो महीने के अन्दर थायरॉयड ठीक हो जायेगा।
- 1 चम्मच मेथी दाना और एक चम्मच त्रिफला मिलाकर सेवन करने से शुगर में अत्यधिक लाभ मिलता है।
- प्रतिदिन प्रातःकाल 5 तुलसी पत्तों का सेवन स्वास्थ्य के लिए संजीवनी का कार्य करता है। ■

अनुकरणीय

वनवासी गाँवों की खेती में क्रान्तिकारी प्रयास नाशिक जिले में बनाए दो चैकडेम

वनवासी कल्याण आश्रम जहाँ-जहाँ कार्य कर रहा है वहाँ विभिन्न प्रकार के प्रकल्पों के संचालन में साथ-साथ स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए कई प्रकार के उपक्रम भी करता है। जैसे जहाँ पानी की समस्या है उसके समाधान के लिए सरकार पर अवलम्बित रहते हुए बैठे रहना एक सामाजिक संस्था के लिए शोभा नहीं देता। समाज सहयोग लेकर अपने स्वयं के प्रयासों से समस्या के समाधान हेतु कुछ न कुछ प्रयास अवश्य करने चाहिए।

वनवासी कल्याण आश्रम महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने ऐसा ही विचार कर नाशिक जिला के पेठ विकास खण्ड के केलविहीर और सदापाडा ऐसे दो छोटे-छोटे गाँवों में चेकडैम बनाने के प्रयास किए। केलविहिर के डैम को पुन: निर्मित किया गया और उसकी ऊँचाई भी बढ़ाई गई। सदापाडा में तो नये चैकडेम का निर्माण किया गया।

वर्तमान में सभी जगह सीएसआर फंड की चर्चा चल रही है। इस चैकडेम के निर्माण में भी ए.बी.बी. कंपनी के सी. एस.आर. फंड का उपयोग किया गया। ये दो चैकडेम के निर्माण के साथ इस वर्ष कुल छह चैकडेम बनाये गये जो वनवासी कल्याण आश्रम जैसी सामाजिक संस्था के लिए अपने आप में गौरव प्रदान करने वाली बात है।

नाशिक नगर के अभियंताओं से प्राप्त सहयोग को भी हम कैसे भूल सकते हैं? जिन्होंने अपनी सेवा और धन के माध्यम से सहयोग किया है। आप सभी वाचकों को एक जानकारी देना आवश्यक है कि अभियंताओं ने इसके पूर्व भी ऐसा ही सहयोग समय-समय पर दिया है।

हंगपन दादा सर्वोच्च वीरता पुरस्कार से सम्मानित

हवलदार हंगपन दादा को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया, जिसे दादा की पत्नी नासेन लोवांग ने पति की याद में रोते हुए ग्रहण किया।

शहीद हंगपन दादा को मिला अशोकचक्र-दादा को जम्मू एवं कश्मीर में पिछले साल 27 मई को आतंकवादियों से लड़ते हुए अदम्य साहस और आत्मबलिदान के लिए सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले के बोरदुरिया गांव में 2 अक्टूबर 1979 में जन्मे दादा स्पेशल फोर्स के 3 पारा में शामिल हुए थे, इसके बाद उन्हें 2008 की जनवरी में मातृ इकाई असम राईफल्स में भेज दिया गया था। सेना द्वारा जारी बयान में बताया गया कि दादा हमेशा मृदुभाषी दृढ़ इच्छाशक्ति और वीरतापूर्ण कौशल वाले सैनिक के रूप में जाने जाते थे।

उन्होंने 2016 के मार्च में 35 राष्ट्रीय राइफल्स में स्वेच्छा से सेवाएं दी थीं। दादा ने कश्मीर के नौगाम सेक्टर में घुसपैठ का प्रयास कर रहे आतंकवादियों से ही लड़ते हुए तीन आतंकवादियों को मार गिराया था और घायल होने के बाद चौथे आतंकवादी से उनका हाथापाई हुई। जिसके बाद उन्होंने उसे भी मार गिराया। इस दौरान उन्हें गले और पेट में गोली लगी, जिससे वह शहीद हो गए। उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार से 15 अगस्त 2016 को भी सम्मानित किया गया था।

भामाशाह श्री बनवारी लाल जी मोरारका ने करवाया मन्दिर निर्माण

वनवासी बेल्ट में बागपुरा परियोजना के अन्तर्गत एक छोटा मंदिर बनवाने हेतु भीलवाड़ा के भामाशाह श्री बनवारी लाल जी मोरारका ने एक लाख रुपया देने का संकल्प व्यक्त किया है। साधुवाद । ज्ञात हो कि उस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां ज्यादा हैं। छोटे- छोटे गाँवो में धर्मजागरण हेतु देवस्थानों की आवश्यकता है । ■

बोधकथा.....

आओ और जाओ

एक बार गांव में एक बूढ़ा विद्वान फकीर आया। उसने गांव के बाहर अपना आसन जमाया। वह लोगों को अच्छी-अच्छी बातें बतलाता था। थोड़े ही दिनों में वह मशहूर हो गया। सभी लोग उसके पास कुछ न कुछ पूछने को पहुंचते थे। गांव में एक किसान रामदीन रहता था। उसके पास बहुत सी जमीन थी, फिर भी वह गरीबी में जीवन गुजार रहा था। उसकी खेती कभी अच्छी नहीं होती थी। धीरे-धीरे रामदीन पर बड़ा कर्ज हो गया। महाजन उसे कर्ज चुकाने के लिए तंग करने लगा। लेकिन खेतों में अब भी कुछ पैदा नहीं होता था। रामदीन खुद तो खेतों में बहुत कम जाता था, सारा काम नौकरों से लेता था। उसके यहां दो नौकर थे। वे जैसा चाहते, वैसा करते थे। आखिर महाजन से तंग आकर रामदीन ने अपनी आधी जमीन बेच दी। जिस किसान ने उसकी जमीन ली थी, वह बड़ा मेहनती था। वह अपना सारा काम अपने हाथों से करने की हिम्मत रखता था। जो काम उससे न होता वह मजदूरों से कराता, पर रहता सदा साथ था। वह कभी अपना काम मजदूरों के भरोसे नहीं छोड़ता। पहली ही फसल में उस किसान ने उन खेतों को इतना अच्छा बना दिया कि उनमें चौगुनी फसल हुई। रामदीन ने जब यह देखा तो वह अपने भाग्य को कोसने लगा। थक-हारकर वह समस्या के समाधान के लिए फकीर के पास गया। फकीर उसकी बात सुनते ही समझ गया। उसने कहा-तुम्हारे भाग्य का भेद सिर्फ **''जाओ और आओ''** में है। वह किसान 'आओ' कहता है और तुम 'जाओ' कहते हो। वह किसान मजदूरों से कहता है आओ, खेत चलें। वह उनके साथ जाता है और साथ-साथ मेहनत करता है। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे खेतों में भी खूब पैदावार हो तो जाओ छोड़कर आओ के अनुसार चलना सीखो। रामदीन अब समझ गया। उसे अब आओ और जाओ में फर्क मालूम पड़ गया था। ■

कविता .....

कदम मिलाकर चलना होगा

- अटलबिहारी बाजपेयी

बाधाएँ आती हैं आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटायें,
पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसे यदि ज्वालायें,
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।।1।।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।।2।।

उजियारे में, अंधकार में,
कूल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।।3।।

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल सफल, समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।।4।।

कुश कांटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन,
पर-हित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।।5।।

रक्षाबंधन उत्सव

स्नेह-प्रेम-विश्वास का, यह राखी त्यौहार,
रहे हमेशा स्मरण में, सांस्कृतिक उपहार।
जयी बनो सैनिक मेरे , राखी का संदेश,
शुभाशंसा तेरी खातिर, करता पूरा देश ।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com